International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

उरांव जनजाति की भाषा: कुडुख का भाषाई विश्लेषण

(छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)

विकाश कुमार, डॉ. अशुतोष मंडावी

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र उरांव जनजाति की भाषा 'कुडुख' का विस्तृत भाषाई विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो द्रविड़ भाषा-परिवार की उत्तरी शाखा से संबंधित है। छत्तीसगढ़ राज्य में उरांव जनजाति की एक महत्वपूर्ण जनसंख्या निवास करती है, विशेषकर जशपुर, सरगुजा, रायगढ़, बिलासपुर और कोरबा जिलों में। यह अध्ययन कुडुख भाषा की ध्वनि संरचना, व्याकरणिक विशेषताओं, दैनिक वार्तालाप के व्यावहारिक स्वरूप, लिपि विकास एवं इसकी वर्तमान स्थिति पर केंद्रित है।

कुडुख भाषा भारत की उन जनजातीय भाषाओं में से है जिसे यूनेस्को की सूची में 'संकटग्रस्त' (असुरक्षित) घोषित किया गया है। छत्तीसगढ़ में इस भाषा के वक्ता झारखंड के बाद देश में दूसरे स्थान पर हैं। राज्य शासन के आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (रायपुर) द्वारा इसके संरक्षण और मैदानी अमले के साथ संवाद सहज करने हेतु 'कुडुख बोली वार्तालाप संक्षेपिका' जैसे महत्वपूर्ण प्रलेख तैयार किए गए हैं। इस शोध-पत्र में कुडुख भाषा की व्याकरणिक बारीकियों और व्यावहारिक शब्दावली का तुलनात्मक व विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: उरांव जनजाति, कुडुख भाषा, द्रविड़ भाषा-परिवार, छत्तीसगढ़, वार्तालाप संक्षेपिका, भाषा विश्लेषण।

1. परिचय

भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान और अस्मिता का मूल आधार होती है। जनजातीय समाजों में इसका महत्व और बढ़ जाता है क्योंकि उनकी अधिकांश परंपराएँ, लोकगीत और मौखिक ज्ञान ऐतिहासिक रूप से लिखित न होकर वाचिक परंपरा के माध्यम से जीवित रहते हैं।

उरांव जनजाति (जिन्हें कुडुख या ओराओं भी कहा जाता है) भारत तथा छत्तीसगढ़ की एक प्रमुख और जागरूक अनुसूचित जनजाति है। भाषाई दृष्टि से यह द्रविड़ भाषा-परिवार की उत्तरी शाखा के अंतर्गत आती है। भौगोलिक रूप से छत्तीसगढ़ का उत्तर-पूर्वी भाग (सरगुजा संभाग एवं रायगढ़) छोटानागपुर के पठार का विस्तार होने के कारण झारखंड और ओडिशा की सांस्कृतिक सीमाओं से जुड़ा हुआ है, जिससे यहाँ कुडुख वक्ताओं की सघन आबादी है। 2011 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ में उरांव जनजाति की जनसंख्या 7,48,789 है, जो राज्य की जनजातीय विविधता में एक विशिष्ट स्थान रखती है।

2. कुडुख भाषा का भाषाई वर्गीकरण एवं विशेषताएं

- कुडुख भाषा का वैज्ञानिक वर्गीकरण निम्नानुसार है:
- भाषा-परिवार: द्रविड़ भाषा-परिवार (उत्तरी शाखा)।
- निकटतम संबंधी: माल्टो (झारखंड/पश्चिम बंगाल की पहाड़िया जनजाति) और ब्राहुई (बलूचिस्तान)।

- प्रमुख गोत्र एवं टोटम: उरांव समुदाय पितृसत्तात्मक होता है और यह कई बहिर्विवाही गोत्रों (टोटेमिक समूहों) में विभक्त है, जैसे—लकड़ा, तिग्गा, तिर्की, टोप्पो, मिंज, बेक, खलखो, कुजुर, एक्का आदि। इन गोत्र नामों का प्रभाव उनकी भाषा और लोक-कथ्य पर भी दिखाई देता है।
- प्रमुख उप-भाषाएँ: ओराओं उपभाषा और किसान उपभाषा।

3. भौगोलिक वितरण एवं वक्ता सांख्यिकी (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)

भारत में कुड़ुख भाषा के कुल वक्ताओं का 25.99% हिस्सा छत्तीसगढ़ राज्य में निवास करता है, जो झारखंड (47.89%) के बाद देश में सर्वाधिक है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख निवास क्षेत्र एवं संभाग:

- सरगुजा संभाग: सरगुजा (मैनपाट, उदयपुर विकासखंड), जशपुर (बगीचा, कंसाबेल, पत्थलगांव) और कोरिया जिला।
- बिलासपुर संभाग: रायगढ़ (घरघोड़ा, धरमजयगढ़) और कोरबा व बिलासपुर जिले।
- सांस्कृतिक केंद्र: ग्रामीण अंचलों में आज भी इस भाषा को जीवंत रखने में उनके पारस्परिक सामाजिक संगठन जैसे धुमकुड़िया (युवागृह) और अखरा (सामुदायिक नृत्य व बैठक स्थल) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

4. व्यावहारिक व्याकरण एवं ध्वनि विश्लेषण (Phonology & Morphology)

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के क्षेत्रीय कार्यालय (अम्बिकापुर-सरगुजा) द्वारा संकलित आंकड़ों के आधार पर कुड़ुख भाषा की व्याकरणिक संरचना और ध्वनि-परिवर्तन का विश्लेषण स्पष्ट होता है:

4.1. स्वर एवं संज्ञा भेद

कुड़ुख में मूल स्वरों के साथ-साथ व्यावहारिक रूप से प्राकृत और स्थानीय बोलियों का प्रभाव देखा जाता है।

- घर/मकान को 'ऐड़पा' या 'येड़पा' कहा जाता है।
- पानी के लिए 'अम्बू' या 'अग्गू' शब्द का प्रयोग सरगुजा अंचल की संक्षेपिका में प्रमाणित किया गया है।

4.2. सर्वनाम संरचना (Pronouns)

कुड़ुख भाषा में उत्तम, मध्यम और अन्य पुरुष के सर्वनाम रूप छत्तीसगढ़ी और हिंदी के संपर्क के कारण अत्यंत रोचक विन्यास प्रस्तुत करते हैं:

- उत्तम पुरुष (एकवचन) । हिंदी: मैं । कुड़ुख: येन / ऐन
- उत्तम पुरुष (बहुवचन) । हिंदी: हम । कुड़ुख: आम / येन (वाक्य प्रयोग में)
- मध्यम पुरुष (एकवचन) । हिंदी: तुम / आप । कुड़ुख: नीन
- मध्यम पुरुष (बहुवचन) । हिंदी: तुम लोग । कुड़ुख: नीम / नीन गुठठी
- अन्य पुरुष (एकवचन) । हिंदी: वह (पुल्लिंग) । कुड़ुख: हूस / आस

- अन्य पुरुष (बहुवचन) । हिंदी: वे लोग । कुड़ुख: आर / आर गुठठी

4.3. व्यावहारिक काल और क्रिया (Verbs)

क्रिया के अंत में आने वाले प्रत्यय लिंग और पुरुष के आधार पर परिवर्तित होते हैं:

- जाना = कालके (आज्ञावाचक) । जा रहा हूँ = कालगदन । जाएगा = कालोस।
- आना = बरके । आ रहा हूँ = बरआ दान । आया हूँ = बरचकादान।
- खाना = मोखा । खा रहा हूँ = मोखा लगदान । खायेगें = येन मोखोन।

5. कुड़ुख बोली वार्तालाप संक्षेपिका से प्रामाणिक शब्दावली वर्गीकरण

शोध को धरातलीय प्रामाणिकता देने के लिए संक्षेपिका में दिए गए दैनिक जीवन के शब्दों का वर्गीकरण निम्न सूचियों के माध्यम से समझा जा सकता है:

5.1. पारिवारिक संबंध (Kinship Terms)

कुड़ुख समाज में पारिवारिक रिश्तों को संबोधित करने के लिए अत्यंत विशिष्ट और आदरसूचक शब्द हैं:

- पिता: अबा / अवा
- मां: आमो / आनो
- चाचा / चाची: काका / काकी
- मामा: मामू
- पिता के बड़े भाई / पत्नी: बड़ू / बड़ी
- पत्नी / औरत: मुक्का
- बच्चे / बच्चे लोग: खददार / खद्दार
- दामाद / मेहमान: पाईहर

5.2. प्रकृति, जीव-जंतु एवं कृषि (Nature & Agriculture)

उरांव जनजाति का जीवन प्रकृति और कृषि के बेहद करीब है, जो उनकी शब्दावली में झलकता है:

- सूर्य: बीड़ी (सूर्यास्त होना = बीड़ी मुल्खाली या बीड़ी पुतना)
- पेड़ / पत्ता: मन्नों / अतखा
- जंगल / लकड़ी: जंगल / कन्को
- गाय / बैल: गाय / अण्डो (या अड्डो)
- भैंसा / बकरी: मनखा / ऐडद्या (या येड़ा)
- मुर्गा / मुर्गी: कोकरो / खेर
- धान / चावल: खेस्से (या खेरसे) / तिखील

International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

- मक्का / कोदो: जिन्होर / कोदो

5.3. रंगों के नाम (Colors)

- काला: गोखारो
- पीला: पियर
- सफेद: पण्डस
- लाल: खेसो
- हरा: हरियर

6. दैनिक एवं शासकीय प्रशासनिक वार्तालाप के नमूने

छत्तीसगढ़ के जनजातीय क्षेत्रों में तैनात मैदानी शासकीय अधिकारियों/कर्मचारियों (जैसे वन विभाग, राजस्व, कोटवार या पटवारी) और स्थानीय उरांव ग्रामीणों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए प्रयुक्त होने वाले कुछ महत्वपूर्ण वाक्य निम्नलिखित हैं:

सामान्य परिचय:

1. हिंदी: तुम्हारा नाम क्या है?

   कुड़ुख: निग्हें येंदेर नाम हिऽके? (या निग्है एन्दरा नामे?)

2. हिंदी: मेरा नाम रामचंद्र है।

   कुड़ुख: येन्हें नामें रामचन्द्र हिऽके।

3. हिंदी: तुम कौन से गांव में रहते हो?

   कुड़ुख: नीन ये का पददा नू रअदय्?

4. हिंदी: मैं ठीक हूँ।

   कुड़ुख: ऐन कोड़ेम रअदन। (या अब डाउल रअदा)

5. हिंदी: परिवार में सभी कुशल तो हैं?

   कुड़ुख: परिवार नू जमर कोड़ेग रअदर?

प्रशासनिक एवं व्यावहारिक बातचीत:

1. हिंदी: यहाँ पटवारी कौन है?

   कुड़ुख: ईसान पटवारी ने हिकनर?

2. हिंदी: कोटवार को जरा बुलवा दीजिए।

कुड़ुख: चौकीदार सिन कटिक येरवा चिआ।

3. हिंदी: उस गांव का रास्ता बताओ।

कुड़ुख: आ पद्दा ही डहरे तेन्गा।

4. हिंदी: ज्यादा शराब मत पियो, शरीर को नुकसान होता है।

कुड़ुख: बग्गे अरखी अमा ओना, देह नू नुकशान मनी।

5. हिंदी: तुम लोग हमारी सलाह मानोगे?

कुड़ुख: नीम गुठठी एग्हें सलाह मनओर का?

7. वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संरक्षण के प्रयास

यूनेस्को द्वारा कुड़ुख भाषा को 'असुरक्षित' (Vulnerable) श्रेणी में रखा गया है। छत्तीसगढ़ के संदर्भ में इस संकट के प्रमुख कारण और सरकारी व सामुदायिक प्रयास इस प्रकार हैं:

7.1. चुनौतियाँ:

- सादरी और हिंदी का प्रभाव: छत्तीसगढ़ के सरगुजा-जशपुर अंचल में संपर्क भाषा के रूप में 'सादरी' और आधिकारिक कार्यों में 'हिंदी' का प्रयोग बढ़ने के कारण नई पीढ़ी अपनी मूल मातृभाषा से दूर हो रही है।
- शहरीकरण: रोजगार और आधुनिक शिक्षा के चलते युवाओं का प्रवासन शहरों की ओर हो रहा है, जिससे भाषाई निरंतरता टूट रही है।

7.2. सकारात्मक एवं शासकीय प्रयास:

- संवाद संक्षेपिका का निर्माण: छत्तीसगढ़ शासन के आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (रायपुर) द्वारा 2015-16 में "कुड़ुख बोली वार्तालाप संक्षेपिका" का प्रकाशन किया गया, ताकि प्रशासनिक अमला स्थानीय बोली में संवाद कर शासकीय योजनाओं को धरातल पर क्रियान्वित कर सके।
- शैक्षणिक पहल: उरांव बहुल प्राथमिक शालाओं में स्थानीय भाषा/बोली को बढ़ावा देने की नीतियां लागू की गई हैं।
- सांस्कृतिक त्योहार: करमा पूजा और सरहूल जैसे महापर्वों के अवसर पर गाए जाने वाले पारंपरिक गीतों (डंडी) के माध्यम से मौखिक लोक-साहित्य को सहेजा जा रहा है।

8. निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष:

कुड़ुख भाषा छत्तीसगढ़ की समृद्ध जनजातीय विरासत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल उरांव संस्कृति, गोत्र व्यवस्था और लोक-परंपराओं को संजोए हुए है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी द्रविड़ भाषा-परिवार की एक विशिष्ट उत्तरी कड़ी

है। यद्यपि सादरी और हिंदी के प्रभाव के कारण यह संकट का सामना कर रही है, परंतु शासन के दस्तावेजीकरण के प्रयासों (जैसे वार्तालाप संक्षेपिका) और समुदाय की सांस्कृतिक जागरूकता के कारण छत्तीसगढ़ में इसकी स्थिति अन्य क्षेत्रों की तुलना में जीवंत बनी हुई है।

सुझाव:

1. प्राथमिक शिक्षा में समावेशन: सरगुजा और जशपुर संभाग के उरांव बहुल क्षेत्रों में प्रारंभिक स्कूली शिक्षा को द्विभाषी (कुड़ुख और हिंदी) माध्यम से बढ़ावा दिया जाए।

2. डिजिटल प्रलेखन: संक्षेपिका के व्यावहारिक शब्दकोश और वाक्यों को डिजिटल ऐप्स और यूनिकोड टूल्स के माध्यम से मोबाइल फ्रेंडली बनाया जाए।

3. पारंपरिक संस्थाओं को प्रोत्साहन: गाँवों में स्थित धुमकुड़िया और अखरा जैसी संस्थाओं को पुनर्जीवित कर वहाँ युवा पीढ़ी को मातृभाषा में संवाद और लोकगीत (डंडी) सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार। (2011)। "जनगणना रिपोर्ट (छत्तीसगढ़ जनजातीय सांख्यिकी)", नई दिल्ली।
2. ग्रियर्सन, जी. ए. "लिविस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया", (उद्धृत: डॉ. कान्तिकुमार जैन, 2011)।
3. सरगुजा जिला गजेटियर। (1998)। "भारतीय गजेटियर: सरगुजा", मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़ शासन।
4. पोयफर, मार्टिन। (1972)। "Elements of Kurux Historical Phonology", फ्री यूनिवर्सिटी बर्लिन।